फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 230 अगस्त 2007

एटम बमों जैसी, एटम बमों से ज्यादा खतरनाक हैं परमाणु बिजलीघर।

पहचान और पहचान की जटिलतायें

"मैं" का उदय – "मैं कौन हूँ ?" – एक "मैं" में कई "मैं" – और "मैं" के पार

* इकाई और समूह-समुदाय के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध समस्त जीव योनियों में हैं। मानव योनि में भी दीर्घकाल तक ऐसा ही था। चन्द हजार वर्ष पूर्व ही पृथ्वी के छिटपुट क्षेत्रों में मानवों के बीच "मैं" का उदय हुआ। मनुष्यों के प्रयासों के बावजूद अन्य जीव योनियों के समूह-समुदाय में इकाई ने "मैं" के पथ पर प्रगति नहीं की है। * एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय की इकाईयों में तालमेल सामान्य हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। एक जीव योनि के एक समूह-समुदाय के उस योनि के अन्य समूह-समुदायों के संग आमतौर पर सम्बन्ध मेल-मिलाप के होते हैं पर जब-तब खटपटें भी होती हैं। आपस की खटपटें घातक नहीं हों यह किसी भी योनि के अस्तित्व के आधारों में है। इसलिये प्रत्येक जीव योनि में यह रचा-बसा है। एक जीव योनि के अन्दर की लड़ाई में किसी की मृत्यु अपवाद है। मानव योनि के अस्तित्व के 95 प्रतिशत काल में ऐसा ही रहा है। इधर मनुष्य द्वारा मनुष्य की हत्या, मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की हत्यायें मानव योनि को समस्त जीव योनियों से अलग करती हैं। * अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करना जीव योनियों में सामान्य क्रियायें हैं। बने रहने, विस्तार, बेहतर जीवन के लिये ऐसे संचय जीवों में व्यापक स्तर पर दिखते हैं। प्रत्येक जीव योनि में पीढी में, पीढियों के बीच सम्बन्ध इन से सुगन्धित होते हैं। मानव योनि में भी चन्द हजार वर्ष पूर्व तक ऐसा ही था। इधर विनाश के लिये, कटुता के लिये, बदतर जीवन के लिये भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचय के पहाड़ विकसित करती मानव योनि स्वयं को समस्त जीव योनियों से अलग करती है।

कीड़ा-पशु-जंगली-असभ्य बनाम सभ्य को नये सिरे से जाँचने की आवश्यकता है।

लगता है कि निकट भविष्य में पहचान की राजनीति का ताण्डव बहुत बढेगा। मानव एकता और बन्धुत्व की सदइच्छायें विनाश लीला को रोकने में अक्षम तो रही ही हैं, अक्सर ये इस अथवा उस पहचान की राजनीति का औजार-हथियार बनी हैं। हम में से प्रत्येक में बहुत गहरे से हूक-सी उठती हैं जिनका दोहन-शोषण सिरमाथों पर बैठे अथवा बैठने को आतुर व्यक्ति-विशेष द्वारा किया जाना अब छोटी बात बन गया है। सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों की ही तरह पहचान की राजनीति में भी संस्थायें हावी हो गई हैं। संस्थाओं के साधनों और पेशेवर तरीकों से पार पाने के प्रयासों में एक योगदान के लिये हम यह चर्चा आरम्भ कर रहे हैं।

● मानव योनि में बना-बनाया "मैं" अचानक कहीं से नहीं टपका। यह एक सामाजिक प्रक्रिया की उपज है और बदलाव जारी है।

अन्य योनि के शिशु को पालना, मित्र बनाना दीर्घकाल तक मानव जीवन को एक सुखद विस्तार देता रहा था। परन्तु..... परन्तु जीवन-बेहतर जीवन के लिये अपनी गतिविधियों के एक हिस्से को भौतिक, कौशल, ज्ञान रूपों में संचित करती मानव योनि के नदियों किनारे निवास करते चन्द समूहों-समुदायों में दोहन-शोषण के लिये पशुओं को पालतू बनाना उल्लेखनीय बना। गाय को प्रतिनिधि उदाहरण ले सकते हैं।

दोहन-शोषण के लिये पशुओं को पालतू बनाना निर्णायक मोड़ साबित हुआ। पालतू बनाने के लिये दमन-धोखे और पालतू पशुओं का दोहन-शोषण मानव द्वारा मानव के दमन-शोषण की प्रक्रिया का प्रस्थान-बिन्दु बना।

● जहाँ पशुपालन उल्लेखनीय बना वहाँ मानव योनि के समूह-समुदायों में मेल-मिलाप के स्थान पर टकराव बढे। गायों के लिये युद्ध। अच्छे "हम" और दुष्ट "वे-अन्य" की रचना की अगली कड़ी "अन्यों" को दास बनाने की बनी।

आरम्भ में पूरा समूह-समुदाय पालतू पशुओं का स्वामी था। दासों का स्वामी भी आरम्भ में पूरा समूह-समुदाय होता था। स्वामी गण। आज जिन गणतन्त्रों और उनके नागरिकों की महिमा गाई जाती है उन में दास नागरिक ही नहीं थे। स्वामी और दास बनने-बनाने के साथ मानवों के बीच सतत हिंसा का, अहिंसा के प्रवचनों के संग बढती हिंसा का दौर आरम्भ हुआ।

● हालांकि "हम" और "अन्य" अनेकानेक रूपों में आज भी हैं, स्वामी गण के दौर में ही "गण-हम" का स्थान "मैं" ने ले लिया था। सैंकड़ों दासों और हजारों गायों वाले इस-उस स्वामी के किस्से।

स्वामी और दास बनने-बनाने ने मानव योनि में पीड़ा के पहाड़ बनाने आरम्भ किये। "मैं" के उदय ने पीड़ा को असहनीय बना दिया..... जन्म के पश्चात मृत्यु की निश्चितता "मैं" की पीड़ा को असहनीय बनाना सुनिश्चित करती है। दर्द का बँटवारा "हम" में भी कुछ हद तक होता है पर "मैं" में पीड़ा सिमट-सिकुड़ कर घनी होती है। और फिर, मानव योनि में समुदायों का मिटना-विकृत होना उल्लास का, खुशी का मिटना-विकृत होना लिये है। आज परपीड़ाआनन्द का, दूसरे के दर्द से खुशी का बोलबाला है।

उल्लास के अकाल और असहय पीड़ा "मैं-हम" को अतियों में धकेलते हैं। एक तरफ जीवन को शाप मानने की धारणायें जीवन से मुक्ति-मोक्ष के लिये त्याग-तपस्या-भिक्षु बनने के सपने देखती-दिखाती हैं। दूसरी तरफ लूट-खसूट, दमन-शोषण के विस्तार द्वारा पीड़ा का विस्तार कर "अपनी" पीड़ा से मुक्ति के सपने देखे-बेचे जाते हैं।

● नर-मादा की आनन्ददायक क्रियायें जीव योनियों की निरन्तरता बनाये रखती हैं। परन्तु मानवों में "जीवन ही पीड़ा" बनने ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को पाप और नारी को पाप की मूर्ति करार दिया। ब्रह्मचर्य और सन्यास को आदर्श घोषित किया गया — मानव योनि की समाप्ति ही मानव योनि की मुक्ति! फिर भी, "मैं" रहूँ.., स्त्री "मेरी-ही"..... पुरुष के वंश के लिये लड़के-लड़के-लड़के पैदा करने की मशीन के तौर पर नारी की व्यापक उपस्थिति बनी रही। यह बातें पृथ्वी के कुछ क्षेत्रों, सभ्य क्षेत्रों की ही हैं। आज सम्पूर्ण पृथ्वी पर, समस्त मानवों पर लदी हिमालयी आकार ले चुकी पीड़ा ने पाप को पुण्य घोषित कर दिया है पर .... पर बच्चे नहीं!!

"मैं" के उदय के साथ मानव योनि में स्थापित हुई पुरुषसत्ता और नर-नारी को समेटते "मैं कौन हूँ?" के प्रश्न पर चर्चा अगले अंकों में। (जारी)

एक दर्द हो तो रोलें हम,
सौ-सौ दर्द कहाँ तक रोयें।
दर्द सयानी बेटी का है,
भूखे पेट लगोंटी का है।
हर रिश्ता-नाता सिक्कों का,
आज खुला बाजार हो गया।

— रामगुलाम 'रावत', लखनऊ

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद — 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा–दर–चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

अजय डाइकास्टिंग मजदूर : "प्लॉट 132 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 वरकरों को 4 ठेकेदारों के जरिये रखा है। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में ओरियन्ट पँखों का काम होता है।"

ग्लोब कैपेसिटर वरकर : "22 बी तथा 30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 80 मजदूर स्थाई हैं और इनके ही मई माह से 3510 रुपये किये हैं (10 घण्टे ड्युटी)। कम्पनी की फैक्ट्रियों में हम 300 वरकर कैजुअल हैं। मई में हमारे भी 500 रुपये बढाये हैं और तब यह 2700 हुये हैं। दस घण्टे रोज पर महीने के हमें 2700 रुपये। ग्लोब कैपेसिटर की फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, दो घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं और इनका भुगतान सिंगल रेट से।"

टेकमसेह प्रोडक्ट्स मजदूर : "38 किलो मीटर, मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 3 जुलाई को कम्पनी ने मिठाई बाँटी – जनवरी से जून के 6 महीनों में रिकार्ड 10 लाख कम्प्रेसर के उत्पादन व बिक्री की खुशी में। और..... और जून की तनखा 7 जुलाई को बैंक खातों में भेजी तो निर्धारित से कम उत्पादन हुआ है कह कर प्रत्येक स्थाई मजदूर की तनखा में से 1400 रुपये काट लिये। फिर 10 जुलाई को कम्पनी ने सूचना टाँगी कि आप मजदूरों की लगन व मेहनत को देखते हुये जून की तनखा से काटे 1400 रुपये देने का निर्णय लिया है हालांकि यह बनता नहीं है। वैसे 4 साल पहले 10 महीने में 10 लाख कम्प्रेसर के रिक्रार्ड पर स्थाई मजदूरों को कम्पनी ने टी-शर्ट उपहार में दी थी। चार साल पहले 900 स्थाई मजदूर थे और सीजन में 1000 कैजुअल वरकर कम्पनी रख लेती थी। जबकि, आज स्थाई मजदूर 615 हैं और सीजन में कम्पनी 7-800 कैजुअल वरकर रखती है। चार साल पहले प्रतिदिन के लिये निर्धारित उत्पादन 4000 कम्प्रेसर था, आज 6400 है। स्थाई मजदूर की तनखा 15 हजार रुपये और कैजुअल वरकर की 2558 रुपये। फैक्ट्री में फ्रिज के कम्प्रेसर यहाँ व्हर्लपूल, विडियोकॉन, सैमसंग के लिये तथा तुर्की, ब्राजील, आस्ट्रेलिया आदि को निर्यात के वास्ते। उत्पादन का 15 प्रतिशत व्यवसायिक डीप फ्रीज आदि के लिये कम्प्रेसर हैं।"

चन्दा इन्टरप्राइजेज वरकर : "प्लॉट 1 तालाब रोड़, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में काम कर रहे मजदूरों की हाजिरी प्लॉट 322-323 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में लगती है। दरअसल प्रदूषण आदि के नाम पर मुजेसर फैक्ट्री से सैक्टर-58 तथा प्लॉट 62 सैक्टर-27 सी स्थित फैक्ट्रियों में भेजने के दौरान कम्पनी ने छँटनी की। स्थाई मजदूर 125 से घटा कर 53 कर दिये। कम्पनी की औरंगाबाद (महाराष्ट्र) तथा बद्दी (हिमाचल) में भी फैक्ट्रियाँ हैं और नामों के फेर भी हैं : चन्दा इन्टरप्राइजेज, एस.आर. इन्टरप्राजेज, ए.सी. व्हील्स, फरीदाबाद मैटेलिक्स। इधर कम्पनी ने 'काम नहीं है' कह कर फिर छँटनी करने का यूनियन से समझौता किया है और 18 स्थाई मजदूरों की सूची टाँग दी है। काम नहीं है.... मुजेसर और सैक्टर-58 में एक-एक सफाई कर्मी है, यह दोनों स्थाई हैं और इन दो के नाम भी छँटनी सूची में!! माहौल बनाने के लिये कुछ समय से स्थाई मजदूरों को तनखा देरी से – जून का वेतन 17 जुलाई को दिया। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को दस्तावेजों में कम्पनी दिखाती ही नहीं है। इस समय भी फ्रैबिकेशन तथा बफिंग-पोलिशिंग में 5-6 ठेकेदारों के जरिये रखे 70-80 वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं और जून माह की तनखा 3 अगस्त को जा कर दी। चन्दा इन्टरप्राइजेज-ए.सी व्हील्स में फैब्रिकेशन, पोलिश, इलेक्ट्रोप्लेटिंग के बाद वाहनों के पुर्जे यामाहा, मुंजाल शोवा, बजाज, मारुति फैक्ट्रियों को भेजे जाते हैं।"

बी एन जी ऑटोमोटिव मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 2-3 कैजुअल वरकर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 150 मजदूर काम करते हैं – स्थाई मजदूर एक भी नहीं है। प्रेस शॉप, फोरफेटिंग, मोल्डिंग, डाइकास्टिंग और फैटेलिंग विभागों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और हर महीने 10 से 25 घण्टे खा जाते हैं – किसी मजदूर ने घण्टे लिख कर रखे हों तो कह देते हैं कि अगले महीने में जोड़ देंगे। मशीन खराब होने के कारण निर्धारित उत्पादन पूरा नहीं होने पर उस दिन के 4 घण्टे काट लेते हैं। पावर प्रेसों पर हाथ कटते हैं – तीन महीने पहले एक मजदूर की तीन उँगली कटी, उसकी ई.एस.आई. नहीं करवाई थी इसलिये कम्पनी ने प्रायवेट इलाज करवाया। क्षतिपूर्ति के लिये उस मजदूर ने कम्पनी पर केस किया है। डाइकास्टिंग वालों को 24 घण्टे में दो की जगह एक जोड़ी दस्ताने देते हैं जिस कारण हाथ जलते और छिलते हैं। परसनल मैनेजर और क्वालिटी इनचार्ज गाली देते हैं, धमकी देते हैं। फैक्ट्री में होण्डा, बजाज, सुजुकी, यामाहा दुपहियों के क्लच प्लेट और ब्रेकशू बनते हैं।"

शुभ इंजिनियर्स वरकर : "30 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 और रात 8 से अगली सुबह 8 की दो शिफ्ट हैं – महीने में 6 से 10 दिन तो लगातार 36 घण्टे जबरन रोकते हैं। महीने में 150 से 270 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं। फैक्ट्री में काम करते 50 मजदूरों पर काम का भारी दबाव है – रोज 4-5 गाड़ी माल गुड़गाँव मारुति फैक्ट्री जाता है तथा कुछ उत्पादन सोहना और यहाँ सैक्टर-24 में तीन फैक्ट्रियों में। फैक्ट्री में 14 पावर प्रेस, 2 लेथ, 2 सरफेस ग्राइन्डर, एक वैल्डिंग सैट हैं – हैल्परों से मशीनें चलवाते हैं, हाथ ज्यादा कटते हैं। एक्सीडेन्ट के बाद ई.एस.आई. करवाते हैं – एक ई.एस.आई. वाला खुद महीने में 4 बार फैक्ट्री आता है। साल-भर पहले सन्तोष का दाहिना अँगूठा कटा, ई.एस.आई. से 200 रुपये पेन्शन हुई, नौकरी से निकाल दिया। छह महीने पहले 14 साल के प्रमोद की 4 उँगली कटी, बच्चा था इसलिये फँसने के डर से ई.एस.आई. नहीं ले गये और प्रायवेट में इलाज कराया। तीन महीने पहले 30 वर्ष के रामसेवक के पावर प्रेस पर दोनों हाथ कट गये – फिर दिखाई नहीं दिया, सुना है कि चुप रहने के लिये बीस हजार रुपये दिये हैं..... सरकारी अधिकारी फोन करके आते हैं शायद क्योंकि जब भी वे आते हैं कम्पनी लड़कों को छत पर भेज देती है।"

एन एच पी सी मजदूर : "सरकारी कम्पनी है, बड़ी कम्पनी है। बुढिया नाले के पास एन एच पी सी परिसर में ठेकेदार के जरिये रखे हम मजदूरों की तनखा से पी.एफ. के पैसे पूरे साल काटे जाते हैं पर जमा 6 महीने के ही किये जाते हैं।"

इम्पीरियल ऑटो इन्डस्ट्रीज वरकर "प्लॉट 94 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर सुपिरियर ठेकेदार के जरिये रखे हम मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर पी.एफ. राशि निकालने का फार्म नहीं भरते।"

एस.पी.एल. इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 7, 22, 48 सैक्टर-6 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को जून की तनखा 18 जुलाई तक नहीं दी। कम्पनी ने सैक्टर-6 में ही प्लॉट 21 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ कहे जाते स्थाई मजदूरों को भी जून का वेतन 18 जुलाई तक नहीं दिया था।"

न्यू एलनबरी वर्क्स वरकर : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 20 ठेकेदारों के जरिये रखे 800 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम करते हैं।"

सुपर फैशन मजदूर : "प्लॉट 262 ए-बी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं।"

मौर्या उद्योग वरकर : "गौंछी के निकट सोहना रोड़ पर स्थित फैक्ट्री में 2000 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में काम करते हैं। अधिकतर वरकर 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. पुराने मजदूरों के ही हैं। फैक्ट्री में सिरिंज, तौलिये, रेगुलेटर, वाल्व, सिलेन्डर बनते हैं।"

एल्पिया पैरामाउन्ट रबड़ मजदूर : "प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 कैजुअल वरकरों में से 100 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। पीने का पानी खारा है। फैक्ट्री में सैमसंग, व्हर्लपूल, एल जी का काम होता है।"

टालब्रोस वरकर : "प्लॉट 74-75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं।

(बाकी पेज तीन पर)

प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.07.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये); अर्धकुशल अ 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); अर्धकुशल ब 3770 रुपये (8 घण्टे के 145 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये (8 घण्टे के 155 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये (8 घण्टे के 160 रुपये)। सामान्य स्टाफ में दसवीं से कम 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); 14वीं से कम 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); स्नातक 4160 रुपये (8 घण्टे के 160 रुपये); हलका वाहन चालक 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); भारी वाहन चालक 4160 रुपये (8 घण्टे के 160 रुपये); सुरक्षा गार्ड बिना हथियार 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये)। कम से कम का मतलब है इन से कम तनखा देना गैरकानूनी है। वैसे इन तनखाओं में मजदूर अपने बच्चों को ढँग का पाव-पाव दूध और माता-पिता को ढँग की दाल नहीं खिला सकते।

एक छोटा-सा कदम : अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो कम्पनी-फैक्ट्री-कार्यस्थल का पता देते हुये इन साहबों को पत्र भेजें:

1. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
   श्रम विभाग कार्यालय
   पुराना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
   फरीदाबाद – 121007
2. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
   30 वेज बिल्डिंग
   सैक्टर-17
   चण्डीगढ
3. श्रीमान श्रम मन्त्री,
   हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ
4. श्रीमान मुख्य मन्त्री,
   हरियाणा सरकार
   हरियाणा सचिवालय
   चण्डीगढ

दर्पण में चेहरा ...... (पेज दो का शेष)

ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। चार सौ से ज्यादा कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" ***शिवालिक ग्लोबल मजदूर :*** "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा हमें आज 19 जुलाई तक नहीं दी है।" ***कुंज बिहारी डाईंग वरकर :*** "प्लॉट 95 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 250 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं।" ***एस्को डाइकास्टिंग मजदूर :*** "प्लॉट 30 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में काम करते 90 मजदूरें में से 40 की ही ई.एस.आई. तथा पी.एफ. हैं। वेतन देरी से – माँगने पर डायरेक्टर कहता है कि काम बन्द कर दो, तीन महीने का उत्पादन एडवान्स बना रखा है।" ***एक्सप्रो वरकर :*** "1 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में 100 स्थाई हैं और 100 को 4 ठेकेदारों के जरिये रखा है।" ***जगसनपाल फार्मास्युटिकल्स मजदूर :*** "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जुलाई माह में देय डी.ए. के पैसे कम्पनी 5 वर्ष से नहीं देती।" ***महावीर इन्टरप्राइजेज वरकर :*** "22ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में काम करते 25 मजदूरों में से 2-3 के पास ही ई.एस.आई. कार्ड हैं और पी.एफ. उनका भी नहीं है। जून में हैल्परों की तनखा 1800 रुपये और आपरेटरों की 2300-2400, डायरेक्टर ने जुलाई से बढाने की कही है।" ***जी.बी. इन्डस्ट्रीज वरकर :*** "प्लॉट 134 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 बजे की शिफ्ट है – रविवार को साँय 5½ बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। न्यू होलैण्ड ट्रैक्टर तथा आयशर मोटर के लिये पुर्जे बनाती फैक्ट्री में 14 पावर प्रेस हैं और 30 मजदूरों में से 4-5 के ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। पावर प्रेस से हाथ कटने के बाद ई.एस.आई. प्रावधान पीछे की तारीख से लागू करवा देते हैं।" ***बी.ई.सी. इंजिनियरिंग मजदूर :*** "प्लॉट 53 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में पावर प्रेसों पर हाथ कटते रहते हैं। पावर प्रेसों की मेन्टेनैन्स नहीं करवाये जाने के कारण एक्सीडेन्ट ज्यादा होते हैं।" ***क्लच ऑटो वरकर :*** "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जून की तनखा 14 जुलाई को देनी शुरू की।"

सचमुच में इन हवाओं का, नज़रिया ही तंग है
अहसासात हैं सब कचरा, जेहन पे जंग है
आलाकदों के बिक गये कुछ, इस तरहा से हैं ज़मीर
बिकने लगा इंसान का, अब अंग-अंग है
– मुकेश 'समीर', सागर

बिना टिप्पणी के

पुलिस-खुफिया पुलिस

फरीदाबाद..... विभागीय सूत्रों का कहना है कि सीआईए दल अपने विभाग के आला अधिकारियों के लिये कमाऊ पूत हैं। लोगों को झूठे मामलों में फँसाने का भय दिखा, यह दल आजकल मोटी कमाई कर रहे हैं। कुछ दिनों पूर्व सीआईए के दो दलों से त्रस्त हो कर खेड़ी गाँव में पंचायत आयोजित की गई थी। इस पंचायत में आरोप लगाया गया था कि गाँव के चार दर्जन के करीब युवकों के बारे में सीआईए का कहना था कि उनके पास अवैध इंग्लिश हथियार हैं और वह अपराधों को अँजाम देते हैं। ग्रामीणों का आरोप था कि सीआईए वाले गाँव के युवकों को अकारण जबरन उठा कर ले जाते हैं और पैसे ले कर छोड़ देते हैं।

सोमवार (30 जुलाई) को प्रेम नगर झुग्गी निवासी करीब 22 वर्षीय अनीस को सीआईए का एक दल धर दबोचने के लिये उसके घर पर पहुँचा। सीआईए दल के लोगों को देख वह उन से बचने के लिये घर के पास बह रही नहर में कूद गया। मंगलवार को उसकी लाश सैक्टर तीन पुल के पास से नहर में बरामद हुई। अनीस की माँ बदनू का आरोप था कि सीआईए वाले हर पन्द्रह दिन बाद उसके बेटे के उठा ले जाते थे और उस से किसी भी कबाड़ी का झूठा नाम लेने के लिये कहते थे कि उसने चोरी का माल उसे बेचा है। इसके बाद वह उस कबाड़ी को मामले में फँसाने की धमकी दे पैसे ऐंठ उसके बेटे को छोड़ देते थे।

कुछ माह पूर्व सीआईए का एक दल हथियारों की नोंक पर मुजेसर निवासी एक युवक को उसके घर से सोते हुए ऐसे उठा ले गया जैसे अपराधी अपहरण की वारदात को अँजाम देते हैं। उसके पिता की तीन दिन की मेहनत के बाद उसे पता चला कि उसके बेटे का अपहरण नहीं हुआ है, बल्कि उसे सीआईए उठा कर ले गई है।

इस बारे में एसएसपी आलोक मित्तल ने बताया कि सीआईए की कार्यप्रणाली को न समझने के कारण लोगों को गलतफहमियाँ हो जाती हैं।...

+.... मंगलवार.... युवक की लाश मिलने..... मौके पर कोई हँगामा न हो इसको ले कर पुलिस दल भी मौके पर पहुँच गया। दूसरी तरफ प्रेम नगर झुग्गी के लोग बाइपास रोड़ को जाम न कर दें, इसको ले कर खेड़ी पुल पुलिस चौकी पर कई थानों से फोर्स तैनात कर दी गई थी।..... सोमवार शाम को लोगों ने बाइपास रोड़ को जाम कर दिया था।..... (1.8.07 के 'हिन्दुस्तान' में श्री पवन जाखड़ का संवाद)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

गुड़गाँव से -

अनु इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 102-103 सैक्टर-18, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह पौने नौ और रात सवा नौ बजे सब मजदूरों को एकत्र कर कम्पनी प्रार्थना करवाती है। फिर मैडम प्रोडक्शन मैनेजर उत्पादन के बारे में बोलती हैं। एक पूरी खेप लौट आई तो मैडम बोली कि काम करना है तो करो, कोई जबरदस्ती नहीं है, माल खराब मत करो। एक मजदूर की 15 दिन की तनखा काटी और प्रार्थना के बाद सब के सामने बुला कर अपमानित किया।

"फैक्ट्री में काम करती 400 लड़कियों और 250 लड़कों को 3 ठेकेदारों के जरिये रखा है। तीस स्थाई लोगों में अधिकतर सुपरवाइजर हैं, स्थाई मजदूर 2-4 ही हैं। लड़कियों की सुबह 9 से साँय 6 की शिफ्ट है, कुछ को 1-1½ घण्टे फिर रोकते हैं। लड़कों की सुबह 9 से रात 9½ तथा रात 9 से अगली सुबह 9 बजे तक की दो पाली हैं। ओवर टाइम का भुगतान नये को (6 महीने से पहले वाले को) 8 रुपये प्रतिघण्टा और बाद वालों को 10 रुपये प्रतिघण्टा के हिसाब से।

"काम करते 6 महीने हो जाते हैं तब तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटने शुरू करते हैं। पी. एफ. के पैसे आरम्भ से ही काटते हैं पर 6 महीने होने से पहले नौकरी छोड़ने वालों को यह पैसा मिलता नहीं है। एक मजदूर ने 110 घण्टे काम करने के बाद नौकरी छोड़ दी तो ठेकेदार ने उसे मात्र 400 रुपये दिये और कहा कि बाकी पैसे ई. एस.आई. व पी.एफ. के काटे हैं।

"अनु इन्डस्ट्रीज में सोल्डरिंग का काम ज्यादा है और फैक्ट्री में हीरो होण्डा लाइन, होण्डा लाइन, बजाज लाइन, सोल्डरिंग लाइन तथा रिजेक्शन लाइन हैं। खड़े-खड़े काम करने से पैर व कमर दर्द करने लगते हैं। रफ्तार बहुत रखनी पड़ती है — साँय 6 बजे मैडम को बताने के लिये प्रोडक्शन पूछते हैं। उत्पादन का टारगेट पूरा न हो और मैडम को मशीन खराब आदि कारण बताये बिना चले जाओ तो उस दिन की अनुपस्थिति लगा देते हैं।

"फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। भोजन के लिये स्थान नहीं है, इधर-उधर खाते हैं। भोजन अवकाश के दौरान भी फैक्ट्री से निकलने नहीं देते — किसी कारण रोटी साथ नहीं ले जा पाये तो भूखे रहो। हाँ, चाय कम्पनी देती है।"

लुमैक्स वरकर : "प्लॉट 46 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में 30 स्थाई हैं और बाकी सब को एक ठेकेदार के जरिये रखा है। कई शिफ्ट हैं : मोल्डिंग में सुबह 6 से साँय 6½ और साँय 6½ से अगली सुबह 6 बजे तक; असेम्बली, फिनिशिंग व मेन्टेनैन्स में सुबह 9 से रात 9; क्वालिटी विभाग में सुबह 8 से रात 9½; डिस्पैच में सुबह 7 से रात 11½-12 बजे तक की एक शिफ्ट; और फिल्टर विभाग में सुबह 9 से रात 9 की एक पाली है पर महीने में 15 दिन सुबह 9 से अगली सुबह 9 तक की 24 घण्टे की एक शिफ्ट। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, 12 रुपये प्रतिघण्टा के हिसाब से। तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे सब के काटते हैं पर छोड़ने/निकालने पर पी.एफ. की राशि मिलने की बात कम ही है। काम का भारी बोझ है — रोज 6 गाड़ी माल होण्डा स्कूटर फैक्ट्री को और एक गाड़ी तथा दो टैम्पो माल मारुति कार फैक्ट्री को जाता है। उत्पादन के फेर में मजदूरों को जगह से हिलने नहीं देते। वाहनों के फिल्टर, इंजन पार्ट्स, बत्ती बनाती लुमैक्स की मानेसर सैक्टर-5 में दूसरी फैक्ट्री के संग गुड़गाँव सैक्टर-18, धारुहेड़ा और फरीदाबाद में फैक्ट्रियाँ हैं।"

डेल्फी मजदूर : "42 मील पत्थर दिल्ली-जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 2558 वाली कम से कम तनखा नहीं देते थे और अब 3510 रुपये वाला न्यूनतम वेतन भी नहीं। चार ठेकेदारों के जरिये रखे हम 2500 वरकर फैक्ट्री में काम करते कुल मजदूरों का 90 प्रतिशत हैं। हमें छुट्टी करने से रोकने के लिये 2428 रुपये तनखा में उपस्थिति भत्ता 300 रुपये था — महीने में एक छुट्टी करने पर उस दिन की दिहाड़ी के संग 300 रुपये और काट लेते। अब तनखा बढाने के संग महीने की 1 से 10 तारीख के बीच छुट्टी करने पर दिहाड़ी के साथ 400 रुपये उपस्थिति भत्ता के काटेंगे, 10 से 20 तारीख के दौरान छुट्टी करने पर दिहाड़ी के संग 200 रुपये काटेंगे, 20 से 30 तारीख के बीच छुट्टी करने पर दिहाड़ी के साथ 200 रुपये काटेंगे। एक और घालमेल महीने को 22 से 22 बताना शुरू कर 20 से 20 तारीख का बताने लगे हैं...... तनखा पहले की ही तरह 7-8 तारीख को।

"ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, महीने में 200 घण्टे से ज्यादा भी हो जाता था जिनमें से 30-40 घण्टे खा जाते थे..... अब 20 जुलाई से ओवर टाइम बन्द कर दिया है। शिफ्टें अब भी तीन हैं पर 12-12 घण्टे की बजाय 8-8 घण्टे की। और, 12 घण्टे में बनती 108 हारनेस को 8 घण्टे में बनाने के लिये जबरदस्ती करते हैं।

"डेल्फी कम्पनी में हेराफेरी का बोलबाला है। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे हम सब की तनखा से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। पी. एफ. का नम्बर 6 महीने बाद बताने की कहते हैं पर साल से ज्यादा हो जाने वालों को भी नहीं बताते। एपरन खो जाने पर 200-300-500 रुपये मुँह देख कर काटते हैं — फैक्ट्री में लॉकर नहीं देते इसलिये एपरन हमारे साथ कमरे और फैक्ट्री की यात्रा करता है। पहचान-पत्र खो जाने पर भी 200-300-500 रुपये..... और डोरी खोने पर 50 रुपये दो! हमें जो पे-स्लिप दी हैं वो फर्जी हैं — ठेकेदार ने कम्प्यूटर से निकाली इन पे-स्लिपों पर महीने में 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम और उसका सिंगल रेट से भुगतान दर्ज किया है (कानून तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम नहीं का है, भुगतान दुगुनी दर से)।

"कैन्टीन में ठण्डी-कच्ची-जली रोटी ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों के लिये हैं। स्थाई मजदूर ताजा ठीक रोटी कैन्टीन के अन्दर जा कर ले आते हैं पर हमें भीतर नहीं बड़ने देते।"

ओमैक्स वरकर : "सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 200 स्थाई और 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूर काम करते हैं। अधिकतर स्थाई मजदूर टूल रूम में डाई बनाते हैं और उनकी 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 12 घण्टे खड़े-खड़े काम करने का गन्दा नियम है। भारी काम है — हीरो होण्डा मोटरसाइकिलों के 20 तथा 30 किलो के बॉडी फ्रेम बनते हैं। उठा कर उल्टा-पुल्टा कर 12 घण्टे लगातार वैल्डिंग करने में पेट की ऐसी-तैसी हो जाती है। ऊपर से कम्पनी निर्धारित उत्पादन बढाती रहती है और छुट्टी टारगेट पूरा करने पर ही — फैक्ट्री में पानी-पेशाब भी मुश्किल हो जाता है और 12 घण्टे बाद भी एक-दो घण्टे रोक लेते हैं।"

गुड़गाँव में तीन भाई : "बड़े भाई रात 9½ बजे फैक्ट्री से लौटते हैं और हाथ-मुँह धो कर सुबह के जूठे बर्तन साफ करते हैं। मैं 10-10½ कमरे पर पहुँचता हूँ और थोड़ा ताजा हो कर दाल-चावल बनाता हूँ। उस समय बड़े भाई सुबह के लिये सब्जी लाने मण्डी जाते हैं। मझला भाई 11 बजे बाद लौटता है। भोजन 11½ तक तैयार होता है, 12½-1 बजे सोना। अगल-बगल के 6 कमरों के बीच एक लैट्रीन व एक बाथरूम और सब में ड्युटी वाले हैं तथा कुछ के बच्चे स्कूल जाते हैं इसलिये हमें सुबह 6 बजे उठना पड़ता है..... नींद पूरी नहीं होती, कार्यस्थल पर झपकी आती है, भूख मर जाती है। ताजा हो कर मैं रात के जूठे बर्तन धोता हूँ और हम रोटी-सब्जी बनाते हैं। आठ बजे तक सब तैयार कर ही लेना। नहाना और नाश्ते में सब्जी-रोटी खाना। भोजन डिब्बों में रख कर हम तीनों 8½ बजे ड्युटी के लिये निकल पड़ते हैं। पैदल जाते हैं और कार्यस्थलों पर पहुँचने में 10, 30 तथा 40 मिनट लगते हैं। निर्यात के लिये वस्त्र तैयार करती फैक्ट्री में बड़े भाई की रोज 12 घण्टे की ड्युटी है। मझले भाई ग्रुप फोर में सेक्युरिटी गार्ड हैं और इस समय प्रतिदिन 14 घण्टे ड्युटी करते हैं — उनकी महीने के तीसों दिन 12 घण्टे की ड्युटी तो रहती ही है। गाँव से लौटने पर कुछ दिन खाली रहने के बाद मैं वाहन उद्योग से जुड़ी एक फैक्ट्री में 12½ घण्टे रोज की ड्युटी कर रहा हूँ। यहाँ दो भाई थे तब कमरे का किराया 1300 रुपये था, मेरे आने पर मकान मालिक ने इसे 1500 कर दिया। अब बिजली का अलग मीटर लगा दिया है, 100-150 रुपये महीने के और लगेंगे। कूड़े के 50 रुपये..... कोई मजदूर अपने साथ परिवार को यहाँ कैसे रख सकता है ? घर पैसा भेजना जरूरी है — माँ और भाभी गाँव में खेती करती हैं, छोटा भाई पढता है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**